स्नातक खण्ड-2
हिन्दी प्रतिष्ठा
चतुर्थ पत्र

(1) कल्याणी का चरित्र चित्रण।

उत्तर स्त्री पात्रों के चित्रण में प्रसाद जी ने स्त्री को वासना की ही पूर्ति भर के लिए नहीं बनाते।

कल्याणी का चरित्र भी ऐसी ही नारी मर्यादाओं के बीच में विकसित हुआ है। कल्याणी देवसेना की भाँति प्रारम्भ में तो चन्द्रगुप्त का प्रेम संवारती है और फिर विजया की भाँति अपने को असफल पाकर आत्महत्या कर लेती है।

कल्याणी नंद जैसे विलासी राजा की कन्या है फिर भी उसके विचार बहुत सरल और उसका चरित्र आत्म सम्मान, दृढ़ता का आधारित अवलम्बन लिए हुए हैं। सहृय एवं कर्तव्यनिष्ठा कल्याणी सदैव अपने ध्येय के लिए जागरूक रहती है

मौर्य कुमार चन्द्रगुप्त से उसकी बाल्यमैत्री है। अतः उसके प्रति स्वाभाविक रूप से प्रेम होना सम्भव है। प्रेमी हर स्थिति में प्रिय को यह बताना चाहता है कि उससे वह प्रेम करता है। साथ ही अपने प्रिय के उद्गार भी अपने प्रति सुनना चाहता है

कल्याणी बहुत समय तक अपने प्रेम का प्रत्युत्तर प्रेम के ही रूप में चन्द्रगुप्त से नहीं पाती, फिर भी अधीर और निराश नहीं होती। वह समझ लेती है कि चन्द्रगुप्त इस समय देश की दुर्दशा के कारण वैसा करने में असमर्थ है। इसी बात को वह चाणक्य के मुख से कि "परन्तु राजकुमारी उसका असीम प्रेमपूर्ण हृदय मग्न हो जायगा। वह बिना पतवार की नौका में इधर-उधर रहेगी।

चन्द्रगुप्त से अपना प्रेम स्पष्ट करती हुई कहती है कि "कल्याणी ने वरण किया था एक पुरुष को वह था चन्द्रगुप्त, परन्तु तुम मेरे पिता के विरोधी हुए। इसलिए उस प्रणय को प्रेम पीड़ा को पितृ-भक्ति की स्मृति में वह अपने प्रेम की आहुति चढ़ाकर आत्महत्या कर लेती है।

इस प्रकार कल्याणी के चरित्र के आकर्षण हैं—कर्तव्यनिष्ठ होना, प्रेम और कर्तव्य की एक ही मूल की दो शाखाएँ समझना अर्थात अनुभूति में प्रेम और अभिव्यक्ति में कर्तव्य तथा स्वावलम्बी होना मानवीय दुर्बलताएँ जो सहानुभूति का कारण बनती है।

— x —